प्रकृति विज्ञान

सूर्य प्रकाश से जीवन

अशोक 'मानव'

वह है इसीलिए मैं हूँ मैं हूँ इसलिए वह सुरक्षित है"। सूर्यदेव ही क्यों? सत्यदेव क्यों नहीं? सत्य क्या है? कितने लोग जानते हैं, जो जानते हैं, क्या कोई ऐसी परिभाषा दी जिसे हर सत्य में इतनी निश्चितता नहीं कि वह उसी रूप मं दूसरी जगह भी सक्षम हो उसे कैसे सत्य मान सकते है। आप शून्य पर खड़े होकर देखिए क्या आपकी आत्मा उसे सत्य मानती है? पर यह आपका प्रश्न है, इसे आप जान सकते हैं। मैं तो सत्य को खेज रहा हूँ जो वास्तव मं है। समाज का मापदण्ड कहता है कि जीव हत्या करना सत्य हैं हत्या एक अर्थ में सत्य और दूसरे अर्थ में असत्य है। 'तत्व' का अनत कभी नहीं होता। तत्व में जब जीवन प्रवेश कर आता है तो उसका अनत सुनिश्चित हो जाता है। सवाल यहाँ पर यह उठता है कि किसका अन्त स्वाभाविक गति से होता है और किसका असमय। सत्य जिसे मानव समाज स्वीकारता है, यह सत्य मानव समाज, मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए स्वीकारता है। यह सत्य मानवता की रक्षा करता है प्रकृति की सत्यता नहीं सिद्ध करता है।

सत्य सदैव वर्तमान होता है। यह अतीत नहीं है जिसकता अन्त होता है उसे अतीत कहते हैं। सत्य का अन्त कभी नहीं होता। सत्य सूर्यदेव है इनका अन्त कभी नहीं है। सूर्यदेव सत्य का एक गोला है जो सदैव प्रकाशित होता है जब वह प्रकाश प्रकृअित में फैलता है तो उस प्रकाश से असत्य जलता है और सत्य प्रकाशित होता है, इससे निकलने वाली भावना से मौसम परिवर्तित होता है। सूर्यदेव सत्य हैं इसलिए प्रकृति से निकलने वाला सत्यदेव के पास ही पहुँच जाता है फिर वही सत्य प्रकृति को प्रकाशित करता है।

ऐसा प्रश्न मन में आए कि क्या सब कुछ सूर्यदेव है कि सत्य सिर्फ सूर्यदेव से निकलता है और कहीं से नहीं। यहाँ पर यह जान लेना आवश्यक है कि सत्य सूर्यदेव से निकलता है तो वह दिखायी क्यों नहीं देता है?

सत्य सूर्यदेव से निकलता है यह पूरी तरह सत्य हैं इसे जानने के लिए प्रकृति की क्रिया को पहवानना होगा। प्रकृति में सात रंग होते हैं यह सूर्यदेव के सत्य का ही परिणाम हैं। सूर्यदेव से निकलने वाला सत्य प्रकाश हर तत्व के असत्य को जलाकर सत्य करता है फिर वह तत्व स्वाभाविक गति से करता है। जरा सोचिए काला रंग जो विरोध का प्रतीक है वह पूर्ण सत्य है, आँख की पुतली जो देखने का कार्य कर रही है जिससे हम सब कुछ देख सकते हैं वही काला है फिर उसे असत्य कैसे कहा जा सकता है। यदि उसे असत्य कहते हैं तो इसका मतलब हम जिससे देख रहे हैं वह गलत है, यह जीव प्राणी का एक भ्रम है। इसी प्रकार सात रंग का निर्माण होता है जिससे प्रकृति को रंग मिलता है। प्रकृति का अपना कोई रंग नहीं है जब सूर्यदेव तत्व को जलाकर सत्य का निर्माण करते हैं तो उसके जल से रंग का निर्माण होता है। इसी अर्थ को देखते हुए मानव समाज हफ्ते में 7 दिन रखता है जो सात रंग का प्रतीक है। जब आज कहीं पर गन्दगी कर देते हैं तो उस पर सूर्यदेव का प्रकाश असत्य को जलाकर जीव प्राणी का विकास कर देते हैं जो जीव जिस मूल में पैदा होता है वहीं की वस्तु उसका आहार होती हैं इसलिए गन्दी जगह पैदा होने वाले जीव गन्दी वस्तु ही खाकर जीवित रहते हैं जो उस गन्दगी को साफ करने का कार्य करते हैं मछली को लोग मारकर खा लेते हे, यहाँ पर इतना सोचना जरूरी है कि यदि जल में मछली नहीं होगी तो जल में इतनी गन्दगी बढ़ जायेगी जिसे पीना सम्भव नहीं होगा। मानव जीवन के लिए यह सबसे बड़ी चुनौती होगी। जितना आवश्यक मानव समाज के लिए श्वसन है जो शुद्ध भावना से शुद्ध मिलता है उतना ही आवश्यक शुद्ध जल भील है। इस प्रकृति में असत्य तत्व और जीव है सभी सूर्यदेव के प्रकाश से अपना विकास करते हैं। मानव समाज ने जो भी विकास किया है उसकी सीख उसे प्रकृति से ही मिलती हैं यदि पक्षी को आकाश में उड़ते हुए नहीं देखते तो आज हवाई जहाज से उड़ना सम्भव नहीं हो पाता। प्रकृति में सभी का महत्व है क्योंकि सत्य–असत्य को जलाकर उसका निर्माण करता जो असत्य को अपनी खुराक बनाकर जीवित रहता है। इस प्रकार जो जैसा होगा सूर्यदेव के प्रकाश से उसका वैसा ही निर्माण होगा। यही सत्य है इसमें परिचय नहीं चलता। इसका निर्धारण गुण के आधार पर होता है जो कर्म से निर्मित होता है। सूर्यदेव का कार्य है सत्य को अनवरत छोड़ना जिससे प्रकृति का न्याय मिलता है। यही सतय है जो कभी नहीं रूकता। इस दौड़ में गुण के आधार पर तत्व का निर्धारण होता है।

सकारात्मक चिंतन सत्य है। जिससे अपने आप में अनुभूति में और प्रकृति में भावनात्मक सुगंध के रूप में देखा जा सकता है। जो सतयुग के निर्माण में सहायक होता है।

कुछ सत्य व्यवहारिक है जिसका निर्धारण मानव समाज करता है इस विषय पर विचार कर लेना आवश्यकह "। जिस सत्य में इतनी शक्ति न हो जिसे सभील के सामने बोला जा सके तो उसे आप सत्य कैसे मानेगें। सत्य ही ऐसा है जिसे आप सभी के सामने बोल सकते है, सिर्फ एक व्यक्ति के सामने नही। यदि ऐसा नहीं है तो फिर सत्य–असत्य में क्या अन्तर रहेगा। चोरी से बात करना असत्य का मूल गुण है